''उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन''

नेकराम, प्राचार्य एवं व्याख्याता, श्री इंदिरा गाँधी मेमोरियल पी जी महाविधालय, पीलीबंगा
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – उच्च माध्यमिक स्तर, शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थी।

प्रस्तावना :–

शिक्षा माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

ज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ बालक का शारीरिक रूप से विकास भी सम्भव हो गया है। इसके लिए विद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों की नियुक्ति की गई है, जो बालकों को खेल तथा व्यायाम के बहुत से तरीकों से बालकों को अवगत कराते हैं, परन्तु वर्तमान स्थिति में खेल का विकास उतना नहीं हो पा रहा है, जितना कि होना चाहिए।

विद्यार्थियों में खेल के प्रति रूचि या रूचि में कमी दिखाई देने लगी है। बालक खेल के माध्यम से जितना ज्ञान प्राप्त कर सकता है, उतना शायद कक्षा की चारदीवारी में कैद रहकर नहीं। मैडम मॉरिया मॉन्टेसरी, फोबेल तथा हेनरी कोल्डवेल कुक ने खेल के माध्यम से शिक्षा पर बल दिया है। इन्हीं के अनुसार खेल बालक के तनाव को कम करते हैं। बालक शारीरिक के साथ–साथ मानसिक तथा भावनात्मक रूप से भी परिपक्व होता है। खेल के माध्यम से ही बालक में सहयोग की भावना का विकास होता है अर्थात् शिक्षा के साथ–साथ खेल भी बालक का सर्वांगीण विकास करते हैं।

वर्तमान समय में विद्यालयों में छात्रों की शिक्षा के साथ–साथ खेल पर भी ध्यान दिया जाता है लेकिन विद्यार्थी पूरे रूचि के साथ खेलों में भाग नहीं ले रहे हैं। विद्यार्थियों पर पुस्तकों का बढ़ता बोझ उन्हें खेलों की ओर जाने से रोक रहा है। इसके साथ–साथ माता–पिता भी अपने बच्चों से खेल की अपेक्षा पढ़ाई पर ध्यान देने का दबाव डालते रहते हैं। तकनीकी साधनों ने भी बच्चों की जिन्दगी को इतना व्यस्त कर दिया है कि वे खेल के मैदान के समय को कम्प्यूटर पर खेल खेलकर व्यतीत कर रहे हैं।

इन सब कारणों के साथ–साथ वर्तमान में बदलता सामाजिक परिवेश भी छात्र व छात्राओं के ग्रुप खेल में बाधा बन गया है। ऐसे बहुत से कारण है जिनके कारण अनुसंधानकर्त्ता को विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रूचि में कमी का अहसास हुआ तथा कई ऐसे प्रश्न उभरकर सामने आये, जिनका उत्तर खोजने हेतु यह शोध किया गया।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए व्यवस्थित शिक्षा का प्रबन्ध परम आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति यदि अपने सामाजिक जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता हो तो उसके लिए शिक्षित होना एक अनिवार्यता हो जाती है। बालक जन्म से ही कुछ मूल प्रवृत्तियाँ लेकर उत्पन्न होता है। इन मूल प्रवृत्तियों के समुचित व व्यवस्थित विकास के लिए ही शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा बालक की मूल प्रवृत्तियों का समुचित शोधन तथा मार्गान्तीकरण करके उसे अन्य प्राणियों से उच्चतर बनाती है।

प्रजातन्त्र की सफलता उसके नागरिकों के चरित्र, उनकी कार्यदक्षता तथा कर्त्तव्य परायणता पर निर्भर करती है। शिक्षा द्वारा ही नागरिकों में इन गुणों का विकास होता है। इस कारण ही प्रत्येक देश, जहां प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया है, वहां शिक्षा की अनिवार्यता पर विशेष रूप से बल दिया गया है।

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है। इसके साथ–साथ शारीरिक शिक्षा भी बालक के लिए आवश्यक है। छात्र जीवन में खेलों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। छात्र जीवन में खेल छात्र के तन से स्वस्थ व मन से प्रसन्न रहने के साधन हैं। यदि राष्ट्र के नवयुवकों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होगा तो वह राष्ट्र, सामाजिक नैतिक दृष्टि से उत्तम होगा।

परन्तु वर्तमान में विद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों के बावजूद भी छात्रों में खेलों के प्रति रूचि कम हो गई है। टेलीविजन के माध्यम से जो पाश्चात्य संस्कृति का दुषित प्रचार जिसने हमारी संस्कृति को दूषित कर दिया है। छात्र–छात्राओं के सामूहिक खेल में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है।

बालकों में उचित खान–पान का भी अभाव है। बालक दूध, दही, घी की अपेक्षा चाट, नमकीन पर निर्भर हो गये हैं, जिसकी वजह से बालक को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिल पाती है व बालक शारीरिक रूप से दक्ष नहीं हो पाते हैं।

बालकों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति जिसकी वजह से बालकों की शारीरिक क्षमता क्षीण होती जा रही है। बालक खेल की तरफ आकर्षित नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे बहुत से कारण हैं जिनकी वजह से शोधकर्त्ता को विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रूचि में कमी का अहसास हुआ तथा शोध की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं –

1. ग्रामीण व शहरी छात्रों की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. ग्रामीण व शहरी छात्रों की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध को श्रीगंगानगर क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध को 5 शहरी विद्यालयों एवं 5 ग्रामीण विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध को 100 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत शोध को 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 1 ग्रामीण व शहरी छात्रों की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण छात्र	25	37.08	5.39	1.95	0.01
2.	शहरी छात्र	25	34.16	5.17		0.05

$df = N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 48$

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का मध्यमान क्रमशः 37.08 एवं 34.16 है तथा मानक विचलन क्रमश 5.39 एवं 5.17 है जो कि स्वातन्त्रय संख्या 48 के निर्धारित 0.5 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.1 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और कहा जाता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों के खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2 ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों को दर्शाती हुई सारणी

क्रं. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण छात्राएँ	25	39.84	8.20	1.95	0.01
2.	शहरी छात्राएँ	25	43.96	6.71		0.05

$df = N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 48$

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों का मध्यमान क्रमशः 39.84 एवं 43.96 है तथा मानक विचलन क्रमश 8.2 एवं 6.71 है जो कि स्वातन्त्र्य संख्या 48 के निर्धारित 0.5 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.1 विश्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और कहा जाता है कि ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में अन्तर नहीं है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :–

परिकल्पना 1 :–

''ग्रामीण व शहरी छात्रों की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में सार्थक अन्तर नहीं है।''

उपरोक्त परिकल्पना के अनुसार, जो कि आंकड़ों के मध्यमान, मानक, विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात के प्राप्तांकों के आधार पर स्वीकृत हुई है, के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में खेलकूद के प्रति कमी पायी गयी।

परिकल्पना 2 :–

''ग्रामीण व शहरी छात्राओं की खेलों के प्रति रूचि में कमी के कारणों में सार्थक अन्तर नहीं है।''

उपरोक्त परिकल्पना के अनुसार, जो कि आंकड़ों के मध्यमान, मानक, विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात के प्राप्तांकों के आधार पर स्वीकृत हुई है, के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में खेलकूद के प्रति कमी पायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2. कोल, लोकेश (2006) : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली
3. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
4. पाण्डे, के.पी. (2007) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दोआबा हाऊस प्रकाशन, नई दिल्ली
5. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2008) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.एल. बुक डिपो, मेरठ
6. माथुर, डॉ. एस.एस. (2010) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. सरीन, डॉ. शशिकला (2007) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY